License Information

Study Notes - Book Intros (Tyndale) (Hindi) is based on: Tyndale Open Study Notes, Tyndale House Publishers, 2019, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes - Book Intros (Tyndale)

योएल

जब विपत्ति आती है, तो हम आमतौर पर दो तरीकों में से एक प्रतिक्रिया करते हैं। हम या तो परमेश्वर की ओर मुड़ते हैं और उनके स्वभाव और चरित्र की गहरी समझ के साथ उनके साथ एक नया सम्बन्ध स्थापित करते हैं, या हम परमेश्वर से दूर हो जाते हैं और अपनी समस्याओं के लिए उन्हें या दूसरों को दोष देते हैं। कुछ लोग तो परमेश्वर के अस्तित्व को ही नकार देते हैं। प्राचीन इस्राएल के लोग विपत्ति का सामना करते थे और उन्हें इसी फैसले का सामना करना पड़ता था। क्या वे अपने संकट के समय में परमेश्वर से दूर हो जाएंगे या उनकी ओर मुड़कर उनकी आशीषों की खोज करेंगे?

योएल

पृष्ठभूमि

योएल ने यहूदा और यरूशलेम के लोगों को उस विपत्ति के बीच भविष्यवाणी की, जिसने उनके अस्तित्व को ही संकट में डाल दिया था। एक टिड्डी दल के अभूतपूर्व हमले ने पूरे देश को तबाह कर दिया था। लाखों भूखी टिड्डियाँ लहर दर लहर आकर हर हरे पौधे को खा रही थीं —सब्जी के बगीचे, अनाज की फसलें, अंगूर की बेलें, फल के पेड़, और यहाँ तक कि वह घास भी जिस पर उनकी भेड़ें और बकरियां चरती थीं। ऐसी विपत्ति के सामने, सभी मनुष्य और पशु जीवन खतरे में थे। प्राचीन संसार में, टिड्डियों को मारने के लिए कोई कीटनाशक नहीं थे, आपात स्थितियों के लिए कोई गैर-नाशवान भोजन का भण्डार नहीं था, और न ही कोई राहत संस्थाएं थीं जो खाद्य आपूर्ति ला सकें। ऐसी विपत्ति हज़ारों-लाखों लोगों के लिए, विशेष रूप से छोटे बच्चों और वृद्धों के लिए, मृत्यु की छाया लेकर आती थी।

ऐसे संकट के समय में, यहूदा और यरूशलेम के लोगों के लिए यह स्वाभाविक था कि वे परमेश्वर की न्यायप्रियता और दया के बारे में कठिन प्रश्न करें। *क्या वास्तव में परमेश्वर स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन कर रहे हैं? क्या वे सच में भले हैं?* उन्होंने अपने पाप और विपत्ति के लिए अपनी नैतिक जिम्मेदारी पर भी विचार किया। *क्या परमेश्वर ने हमें दण्ड देने के लिए यह टिड्डी दल भेजा है क्योंकि हम उनके साथ सही सम्बन्ध में नहीं रहे? क्या परमेश्वर हम पर दया करेंगे? क्या हमारा कोई भविष्य है?* ऐसे प्रश्नों के उत्तर में, भविष्यद्वक्ता योएल ने अपने लोगों को प्रभु का वचन सुनाया।

सारांश

योएल की पुस्तक लगभग दो समान भागों में विभाजित है। पहले भाग में (1:1–2:17), भविष्यद्वक्ता यहूदा और यरूशलेम पर आई विनाशकारी टिड्डी दल की विपत्ति का वर्णन करते हैं। यह आपदा इतनी भीषण थी कि उसने पूरे देश को उजाड़ दिया, अनाज, दाखलताओं और वृक्षों को नष्ट कर दिया। आपदा के प्रभाव को एक सूखे ने और बढ़ा दिया जिसने भूमि को सूखा और जला दिया। परिणामस्वरूप, मनुष्य और जानवर दोनों भूख से कराह उठे, और लोगों के पास प्रभु को भेंट के रूप में मन्दिर में लाने के लिए कुछ भी नहीं बचा। इसलिए, 2:12–17 में, योएल लोगों से मन फिराने और अपने दयालु परमेश्वर की करुणा पर निर्भर होने का आह्वान करते हैं। (कुछ टिप्पणीकारों ने इस अंश को प्रभु के आने वाले दिन के अन्तकालीन वर्णन के रूप में समझा है, जिसमें टिड्डी की आपदा का उपयोग एक आक्रमणकारी मनुष्य सेना का वर्णन करने के लिए किया गया है।)

पुस्तक के दूसरे भाग में (2:18–3:21), प्रभु अपने लोगों पर दया करने और टिड्डी की आपदा के बाद उनकी भूमि को पुनर्स्थापित करने का वादा करते हैं। 2:18–27 में, योएल वर्णन करते हैं कि परमेश्वर निकट भविष्य में उनके भौतिक जीवन को कैसे पुनर्स्थापित करेंगे, उनके खेतों, बागों, अंगूर की दाखलताओं और पशुओं को पुनः भर देंगे। 2:28–3:21 में, योएल अपना ध्यान अधिक दूर के भविष्य की ओर केन्द्रित करते हैं जब परमेश्वर उनके आत्मिक जीवन को पुनर्स्थापित करेंगे। उस समय, परमेश्वर अपनी आत्मा उन सभी लोगों पर उंडेलेंगे जो विश्वास के साथ उनकी और मुड़ेंगे। परमेश्वर उन लोगों और राष्ट्रों पर भी न्याय करेंगे जो उनकी प्रभुता को स्वीकार करने से इनकार करते हैं।

योएल

लेखन की तारीख

हम यह नहीं जानते कि भविष्यद्वक्ता योएल कब जीवित थे और उन्होंने भविष्यवाणी कब की थी। योएल उन राजाओं की सूची नहीं देते जिनके अधीन उन्होंने सेवा की (उदाहरण के लिए, आमो 1:1; मीक 1:1), और न ही वे कोई अन्य स्पष्ट ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हैं। इस कारण से, विद्वानों ने योएल के लिए कई अलग-अलग तिथियाँ प्रस्तावित की हैं।

इब्रानी और अंग्रेजी बाइबल में, योएल को होशे और आमोस के बीच रखा गया है, जिन्होंने 700 ई.पू. के दौरान भविष्यवाणी की थी। इससे कुछ लोगों ने प्रस्तावित किया है कि योएल एक प्रारम्भिक भविष्यद्वक्ता थे जो शायद आमोस और होशे से भी पहले जीवित थे। क्योंकि पुस्तक में किसी राजा का उल्लेख नहीं है और यह याजक के पद को अनुकूल रूप से देखती है, इन व्याख्याताओं का विश्वास है कि योएल ने भविष्यवाणी की जब योआश (835–796 ई.पू.) अभी एक बालक थे, जब राज्य यहोयादा याजक के अधीन था (देखें योए 2:17; देखें 2 रा 12:1–21 भी)।

दूसरी ओर, कई विचार योएल के लिए एक बहुत बाद की तारीख की ओर संकेत करते हैं। योएल कभी उत्तरी राज्य इस्राएल या उसकी राजधानी नगर, सामरिया का उल्लेख नहीं करते, जो यह सुझाव देता है कि भविष्यद्वक्ता ई.पू. 722 में उसके विनाश के बाद जीवित थे। इसी प्रकार, योएल कभी अश्शूर या बेबीलोन का उल्लेख नहीं करते, जो 700 से 500 ई.पू. तक इस्राएल के महान शत्रु थे, जिससे कई लोग तर्क करते हैं कि योएल के समय में ये दोनों साम्राज्य इतिहास बन चुके थे। चूंकि ई.पू. 586 में बँधुआई के साथ राजशाही समाप्त हो गई थी, कई विद्वान योएल को बँधुआई के बाद के काल में रखते हैं, जब ई.पू. 538 में यहूदी लोग अपने देश लौटने लगे थे।

अन्त में, कई ऐसे अंश हैं जिनमें योएल को आमोस, सपन्याह, ओबद्याह, और यहेजकेल जैसे नबियों के शब्दों और विचारों का उपयोग करते हुए या सीधे उद्धृत करते हुए देखा जा सकता है। हालांकि यह सम्भव है कि योएल इन नबियों से पहले सेवा कर रहे हों और उन्होंने उनसे सामग्री ली हो, यह भी सम्भव है कि योएल ने पहले के नबियों के शब्दों को अनुकूलित किया हो ताकि परमेश्वर का वचन उन लोगों से कह सकें जो एक पूरी तरह से नई स्थिति का सामना कर रहे थे।

ये अवलोकन यह साबित नहीं करते कि योएल ने बँधुआई के बाद जीवन यापन किया और भविष्यवाणी की, परन्तु वे इतने प्रभावी हैं कि अधिकांश बाइबल विद्वान बँधुआई के बाद की तारीख को स्वीकार करते हैं। सौभाग्य से, योएल ने इतिहास में किस समय भविष्यवाणी की, यह जानना उनके मामले में अन्य भविष्यवक्ताओं की तुलना में कम महत्वपूर्ण है। योएल का संदेश उन मुद्दों से सम्बन्धित है जो हर युग के लिए प्रासंगिक हैं।

अर्थ और संदेश

योएल की पुस्तक में, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि परमेश्वर समस्त सृष्टि पर प्रभुता रखते हैं। वे न केवल प्राकृतिक संसार के, बल्कि मानव सभ्यता के भी स्वामी हैं। टिड्डियों की विपत्ति मात्र एक प्राकृतिक घटना नहीं थी; यह कीटों की सेना परमेश्वर की आज्ञा से आई थी (2:11)। प्रभु वर्षा और सूखा, उर्वरता और अकाल, आशीष और विनाश को नियंत्रित करते हैं। सभी जातियाँ, चाहे वे इस्राएली हों या गैर-इस्राएली, उनकी संप्रभु न्यायिक शक्ति के अधीन हैं, परन्तु ईश्वरीय प्रभुता मानव जिम्मेदारी को नकारती नहीं है।

क्योंकि मनुष्य के पाप ने प्राकृतिक संसार को इतनी नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है, योएल यहूदा और यरूशलेम के लोगों को पश्चाताप के लिए बुलाते हैं। योएल इस्राएलियों को मन फिराने का अवसर दे सकते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि परमेश्वर दयावान और कृपालु हैं। यह परमेश्वर की प्रकृति है कि वे मन फिराने वालों को क्षमा करें बजाय इसके कि उनका न्याय करें, पुनर्स्थापित करें बजाय इसके कि नष्ट करें। एक प्राचीन पाठ का उद्धरण देते हुए (निर्ग 34:6–7), योएल इस्राएलियों को परमेश्वर का अनुग्रहकारी निमन्त्रण देते हैं: "क्योंकि वह अनुग्रहकारी, दयालु, विलम्ब से क्रोध करनेवाला, करुणानिधान और दुःख देकर पछतानेवाला है" (योए 2:13)।

योएल के लिए, पश्चाताप व्यक्त करने का सही तरीका मन्दिर में होने वाली आधिकारिक आराधना थी, जिसे याजकों द्वारा सम्पन्न किया जाता था। यह आश्चर्यजनक लग सकता है क्योंकि अन्य कई भविष्यवक्ताओं ने याजकों और अगुओं में व्याप्त भ्रष्टाचार के कारण औपचारिक आराधना की निन्दा की थी (देखें यशा 1:10–18; आमो 5:21–24), परन्तु योएल ने आराधना के मूल्य को पहचाना जब इसे एक सच्चे हृदय के साथ किया जाता है जो पूरी तरह से परमेश्वर के लिए खुला होता है (यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उत्तर-निर्वासन भविष्यद्वक्ताओं — हाग्गै, जकर्याह, और मलाकी में देखा जाता है)। आराधना में, अदृश्य अनन्त वास्तविकताओं को भौतिक वस्तुओं और क्रियाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। हालांकि, भविष्यद्वक्ता इस्राएलियों को याद दिलाते हैं कि धर्म केवल बाहरी प्रदर्शन से कहीं अधिक है; सच्ची आराधना आन्तरिक परिवर्तन पर आधारित है (योए 2:13)। भ्रष्ट आराधना का समाधान आराधना को छोड़ना नहीं है, बल्कि आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करना है (देखें यूह 4:23–24)।

जो लोग विपत्ति का सामना कर रहे थे, उनके लिए योएल ने यह संदेश दिया कि उनका परमेश्वर भविष्य पर पूरी तरह से नियंत्रण रखता है। उन्होंने उन्हें आश्वासन दिया कि प्रभु के दिन, परमेश्वर संसार में हस्तक्षेप करेंगे ताकि दुष्टों का न्याय किया जा सके और शान्ति और न्याय स्थापित किया जा सके (योए 1:15; 2:1)। फिर वह हर वर्ग, लिंग, और उम्र के लोगों पर अपनी आत्मा उंडेलेंगे, जिससे उनके लोग उनकी विधि के अनुसार जीवन जी सकें। हमारे पतित संसार में जो गलतियाँ अक्सर हावी रहती हैं, वे केवल तभी सही होंगी जब परमेश्वर पूरी तरह से और अन्ततः अपनी सृष्टि में आएँगे (योए 2:28–3:21; देखें मत्ती 16:27; प्रेरि 2:16–40; कुल 2:13–22; प्रका 21–22)।